



Original Article

21 वीं सदी के हिंदी साहित्यकार श्रीराम दूबे के उपन्यासों में चित्रित स्त्री समस्याएँ

डॉ. शहनाज सय्यद¹, पाटील मालन जगन्नाथ²

¹शोध निर्देशक

²शोध छात्रा शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

Manuscript ID:

IJAAR-C130327

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume – 13

Issue – 3

January – February 2026

Pp. 134 – 137

Submitted: 22 Jan. 2026

Revised: 30 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

डॉ. शहनाज सय्यद

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785709

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785709>



Creative Commons



सार:

यह शोध पत्र 21 वीं सदी के हिंदी साहित्यकार श्रीराम दूबे के उपन्यासों में चित्रित स्त्री समस्याएँ इस विषय का विश्लेषण करता है। इस शोध पत्र में लेखक श्रीराम दूबे के व्यक्तित्व और कृतित्व को प्रस्तुत किया है। उनके जो दो उपन्यास हैं – 1. नाचनी 2. भज्जो इसका भी संक्षेप में विश्लेषण किया है।

नाचनी उपन्यास में कहानी यह है कि राजा अपने राज्य में एक नाचनी टोला बसाता है। वहाँपर उनकी एक खास नाचनी होती है। वह नाचती सिर्फ राजा के लिए ही नाचती है और राजा के लिए ही जीती है। वह किसी और के सामने नहीं नाचती।

राजा का पुत्र कुंवर पन्ना भी नाचनी टोले में जो हिरा नाम की नाचनी होती है, उसे चाहता है पर वह बात राजा को मंजूर नहीं है। वह राजा उस हिरा को विष देकर मार देता है। हिरा की मरने की खबर सुनकर कुंवर पन्ना भी पानी में डूबकर अपनी, जीवन यात्रा समाप्त कर देता है।

‘भज्जो’ उपन्यास की कहानी दो प्रेमीओं कि वियोग की कहानी है। इस उपन्यास में मनोज और भज्जो दोनों एक दुसरे को बहुत चाहते हैं पर उनके प्रेम आड समाज, समाज की कुरितीया, जाती भेदभाव आता है। इसी कारण उनकी शादी नहीं होती है। उन दोनों को अपने प्रेम को त्यागना पड़ता है।

मुख्य शब्द: श्रीराम दूबे, नाचनी, भज्जो, उपन्यास नारी, लेखन

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. शहनाज सय्यद, पाटील मालन जगन्नाथ. (2026). 21 वीं सदी के हिंदी साहित्यकार श्रीराम दूबे के उपन्यासों में चित्रित स्त्री समस्याएँ. International Journal of Advance and Applied Research, 13(3), 134 – 137. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785709>

प्रस्तावना:

हिंदी उपन्यास का आरंभ श्रीनिवास दास के परीक्षा गुरु से माना जाता है। हिंदी उपन्यास आधुनिक साहित्य की प्रमुख विधा है। मुंशी प्रेमचंदजी को उपन्यास सम्राट कहा जाता है। यह है हमारे हिंदी उपन्यास की कहानी। मेरे शोध पत्र का

विषय है 21 वीं सदी के हिंदी साहित्यकार श्रीराम दूबे के उपन्यासों में चित्रित स्त्री समस्याएँ। श्रीराम दूबेजी एक भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) अधिकारी थे। पर उन्हें कालेज के दिन से ही लिखने की कला उन्हें में थी। उन्होंने कोरोना काल के



लॉक डाउन की अवधि में लेखक श्रीराम दूबेजी ने पाच पुस्तको कि रचना की है।

नाचनी उपन्यास में चंदनपुर के राजा शंकर प्रसाद सिंह बड़े रईस राजा है। उनके राज्य में एक नाचनी टोला है। वही पर एक खुबसूरत, जवान, रूपसुंदरी नाचनी सोना है। वह नाचनी जिनका नाम सोना है वह सिर्फ और सिर्फ अपने राजा शंकर प्रसाद सिंह के लिए ही नाचनी थी।

दूसरा जो उपन्यास है उस में भज्जो नामकी एक हुनहार प्रोफेसर है। उपन्यास का नाम भी भज्जो ही उस उपन्यास की नायिका भी भज्जो है। इस उपन्यास का नायक प्रोफेसर मनोज है। भज्जो और मनोज दोनो अलग-अलग जाती के होने के कारन उनके प्यार को न्याय नहीं मिला। वह एक दूसरो को बहुत चाहते थे। फिर भी उन्हें आपने प्यार को त्यागना पडा।

लेखक श्रीराम दूबेजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व:

21 वी सदी के हिंदी साहित्यकार श्रीराम दूबे जी का जन्म 4 जनवरी 1943 (प्रमाणपत्रों में) और माँ के अनुसार आजादी के दो साल पहले (1945) उत्तरती बाढ़ के महिने (अगस्त) के आखिरी सप्ताह का कोई दिन (अधीत अगस्त 1945) में हुआ है। उनकी माता जी का शुभ नाम है गंगेश्वरी देवी और उनके पिताजी का नाम है कलु प्रसाद दूबे।

उनकी प्राथमिक कक्षा उत्तर प्रदेश में हुए वही उनका जन्म हुआ था। पिताजी रेल्वे में नोकरी करते थे इसलिए उनकी कालेज की शिक्षा राणीगड में हुई। उन्होंने वर्धमान विश्वविद्यालय में M. A. किया।

लेखक श्रीराम दूबेजी का कृतित्व तो बहुत बडा है। उनका परिवार परिपूर्ण है। हिंदी साहित्य के प्रख्यात साहित्यकार श्रीराम दूबेजी का विवाह सुशीला देवी से हुआ श्रीराम दूबेजी

को चार संतान की प्राप्ती हुई। उनके पुत्र का नाम मनोज और संतोष और उनकी कन्यारत्नका नाम रेणू और पुष्पा।

नौकरी:

M. A होने बाद कुछ. सरकारी नोकरी नहीं थी तब वह एक स्कूल में अध्यापका काम करते थे। 9 वी कक्षा से लेकर वह B.A तक के विद्यार्थियों को पडाते थे। घर में ट्यूशन लेते थे। अध्यापक का काम करने से उन्हें संतोषी मिलती थी। उनको बिहारकी प्रशासन में डिपटी कलेक्टर की नोकरी मिलगई फिर वह 1992 में वह भारतीय प्रशासन नोकरी सेवा में I.A.S के पद पर विराजमान हो गए जिल्हा अधिकारी की नोकरी करते करते वह अपनी लेखन की भूमिका को भूल नहीं सके उन्होंने हर एक जिल्हे में एक किताब लिखी है।

उनकी प्रमुख कृतियाँ:

अग्निव्यूह, नाचनी, भज्जो, उम्र भर लम्बी सड़क, प्लेट फार्म नंबर सात, लघुकथा संग्रह 'कहे कबीरा व्यंग्य - संग्रह- कबिर, कबीर फसा बाजार में, गजल संग्रह - धूप-छाव गीत संग्रह 'सोनमछरिया सतरंगी, राधापर आधारित महाकाव्य 'वृषभानुजा' कविता संग्रह मौन के स्वर, महुआबाग, जंगल सब जानता है, भगवान परशुराम पर महाकाव्य.

पुरस्कार:

भारतीय प्रशासनिक सेवा से अवकाश प्राप्त कर स्वतंत्र लेखन कर रहे, श्रीराम दूबे अब तक "अखिल भारतीय जयशंकर प्रसाद सम्मान लाख गोलियाँ खाई कारगिल गीत के लिए संस्कार भारती व्दारा राष्ट्रीय गीतकार समान, अचल भारतीय सम्मान, साहित्य सेवी सम्मान विक्रमशी विद्यापीठ



द्वारा महाकवि सम्मान, अमिताभ चक्रवर्ती सम्मान एवं मॉरीशस से कर्मयोगी सम्मान प्राप्त

'नाचनी' और 'भज्जो' उपन्यास में चित्रित स्त्री समस्याएँ:

हमारे देश में स्त्री-पुरुष समाता है। पर वह सिर्फ लेखी स्वरूप में जादा और कार्य रूप में कम है। एक स्त्री पूरे परिवारका बोझ चलाती है। वह परिवार के हर सदस्या का खयाल रखती है। देश के हर क्षेत्र में नारी अपना समाज आज भी दायित्व निभाती है। पर उसकी ओर देखते हैं की वह एक दुबली, कमजोर नारी है। वह कुछ नहीं कर सकती खाना पकाने के अलावा ऐसी समज समाज में नारी को मिलती है।

'नाचनी और भज्जो' में भी नारी याने स्त्री ही केंद्रबिंदू है। स्त्री पर ही अत्याचार हुए हैं। स्त्री ही अपना मन मारकर जी रही है मर रही है।

नाचनी उपन्यास में सोना, रूपा हिरा नाम की तीन नाचणी है, वह अपने जीवन एक वेशाके नाम से जी रही है। उन्हें समाज में, कुछ अच्छा स्थान नहीं है। वह समाज में मुक्त संचार नहीं कर सकती। उसे सिर्फ नाचनी टोले में नाच-गाणा-करना पड़ता है। नाचनी टोले में आए हर एक आदमी का दिल बलहाना यह एक उनका काम होता है।

इस उपन्यास में हिरा और कुंवर पन्ना भावी राजकुमार है यह। इन दोन का प्यार होता, है पर यह राजा शंकर प्रसाद सिंह को मंजूर नहीं है। वह हिरा एक नाचनी है, वह राजबाडी की महाराणी नहीं बन सकती ऐसी उनकी सौच थी। राजा ने कुंवर को हिरा से दूर रहने की सलाह दी उनका दायित्व क्या है यह बताया फिर भी कुंवर और हिरा दोनो एक दुसरे को मिलते रहे। कुंवर ने प्रजाकी चिंता नहीं कि अपने प्यार के खातीर यह बात राजा को चुबती रही राजाने नाचणी हिरा को

नाचनी सोना के हात से विष देकर उसे मार दिया जब वह हिरा नाचनी की मृत्यु हो जाती है, तो उसे नाचनी के पैर में दोरी बांध कर उसे स्मशान घाट तक खिचकर ले जाते हैं। तब बाकी की नाचनी गीत गाते हैं कि आगले जन्म में मोहे नाचनी मत बनाओ। हिरा की मृत्यु की खबर कुंवर को लगी तो उन्होंने पानी में डुबकी लगाकर अपने आपको खत्म कर डाला। नाचणी हिरा की लाश तालाबके घाट पर थी और उस तालाब से बहती लाश कुंवर की हिरा के लाशपर तरंगते हुए आ गई थी। नियतीन अखिर दो प्रेमियों को जाते मिला ही दिया।

भज्जो उपन्यास में प्रोफेसर भज्जो और प्रोफेसर मनोज दोनोकी कथा पर है दोनो बहुत ही विद्वान हैं। दोनों अंग्रेजी के प्राध्यापक बहुत प्यार करते हैं पर दोनो की जाती अलग अलग है इसलिए उनका प्यार सफल नहीं होता। मनोज ने अपने मन को मारते हुए भज्जो को बड़े विश्वविद्यालय में भेजा था वह उससे दूर रहा। दोना कभी कभी रविवार के दिन मिलते थे इस मिलन से उनको एक बेटा भी हो जाता है। तब भज्जो के घर वालो से भज्जो और मनोज के ब्याह की बात होती है तो भज्जो के पिताजी जाती अलग होने से उनकी ब्याह का विरोध करते हैं। भज्जो की शादी करोडपति सिख धर्म के लडके से करवाते हैं। और मनोज इधर प्यार के वियोग में डूब जात है वहा उसकी मौत होती है। उसकी शव को भज्जो का बेटा यानी मनोज और भज्जो का बेटा अग्नि दान देता है।

निष्कर्ष:

दोनों उपन्यास में जो चित्रित नारी है उसके मन, तन की हत्या हो गई है, समाजने घर परिवार ने उसे साथ नहीं दिया किसी को मृत्यु की घाट तक पहुँचा दिया तो किसी की जिते जी मरन यातना भूगतनी पड़ी। समाज स्त्री की ओर एक उपयोग साधन से देखता है। उसका मान



सम्मान नहीं करता इसलिए स्त्री का जीवन नर्क से भी जादा खतरनाक हुआ है। स्त्री ऐसे समाज मे दूर रहना चाहती है। ऐसे समाज से नफरत करती है जो समाज स्त्री का सम्मान नही करता उस समाज तो दूर रहना चाहती है।

संदर्भ :

1. नाचणी उपन्यास, लेखक श्रीराम दूबे प्रकाशन बानी पब्लिकेशंस, भोपाल प्रकाशन वर्ष 2022
2. भज्जो उपन्यास, लेखक श्रीराम दूबे, नभन प्रकाशन 4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली – 1/002 प्रथम संस्करण – 2022
3. Google.com
4. You Tube